Newspaper Clips
November 15-16, 2015

November 15

Amar Ujala ND 15/11/2015 P-6

आईआईटी दिल्ली बना जम्मू का मेंटर

शिक्षकों की भर्ती और संसाधनों के विकास में मदद करेगा

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में रह कर ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के इच्छुक छात्रों के लिए अच्छी खबर है। अगले वर्ष जम्मू-कश्मीर केछात्रों को आईआईटी जम्मू का तोहफा मिलने जा रहा है। जम्मू के नगरोटा के करीब शुरू होने वाले इस आईआईटी को मेंटर करने का जिम्मा आईआईटी दिल्ली को मिला है। आईआईटी दिल्ली आईआईटी जम्मू में पाठ्यक्रम शुरू करने में मदद करने के साथ-साथ शिक्षकों की भर्ती व संसाधनों के विकास में भी मदद करेगा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, आईआईटी जम्मू में शुरुआत में

अगले वर्ष जुलाई से जम्मू के नगरोटा में शुरू होगी पढ़ाई

कंप्यूटर, इलेक्ट्रिकल व मैकेनिकल इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम शुरू होंगे

इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल इंजीनियरिंग व कंप्यूटर के पाठ्यक्रम उपलब्ध होंगे। चूंकि आईआईटी दिल्ली को आईआईटी जम्मू को मेंटर करने की जिम्मेदारी मिली है, इसलिए आईआईटी दिल्ली की ओर से इसकी तैयारी शुरू कर दी गई है। 2016 जुलाई में शुरू होने वाले इस आईआईटी में तीन कोर्सेज में 60-60 सीटें होंगी। आईआईटी जम्मू के लिए नगरोटा के पास ही कैंपस के लिए जमीन मिली है। आईआईटी दिल्ली ने आईआईटी रोपड़ की मेंटरिंग भी की है। ऐसे में आईआईटी रोपड़ की मेंटरिंग के दौरान मिले सबक को ध्यान में रखते हुए ट्रांजिट कैंपस वहीं बनाने का फैसला लिया गया, जहां नया कैंपस बनना है। यह इसलिए किया जा रहा है कि जिससे कि नए कैंपस का निर्माण पूरा हो जाने पर उसे स्थानांतरित किए जाने में किसी प्रकार की परेशानी न हो।

आईआईटी जम्मू को मदद करने की जिम्मेदारी आईआईटी दिल्ली के डिप्टी डायरेक्टर (रणनीति एवं योजना) प्रोफेसर एस.के कौल को दी गई है। प्रोजेक्ट इंजार्ज का जिम्मा प्रो. राजेंद्र बहल को दिया गया है।

Dainik Jagran ND 15/11/2015 P-5

दिल्ली के सहयोग से जम्मू में खुलेगा आइआइटी

शैलेन्द्र सिंह, नई दिल्ली

- तीन पाठ्यक्रम के साथ नगरोटा के करीब शुरू होगा ट्रांजिट कैंपस
- सत्र 2016 से शुरू होगी आइआइटी जम्मू में पढ़ाई

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) से इंजीनियरिंग की पढ़ाई के इच्छुक जम्मू कश्मीर के विद्यार्थियों को अब राज्य से बाहर जाने की जरूरत नहीं होगी। दरअसल, आगामी सत्र 2016 से जम्मू के नगरोटा के करीब आइआइटी, जम्मू की शुरुआत होने जा रही है। यहां विद्यार्थियों के लिए कम्प्यूटर, इलेक्ट्रिकल व मैकेनिकल इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम उपलब्ध होंगे। खास बात ये है कि इस संस्थान की शुरुआत की जिम्मेदारी आइआइटी दिल्ली के कंधों शुपर है।

जम्मू, आइआइटी के लिए मेंटर इंस्टीट्यूट की भूमिका आइआइटी, दिल्ली निभाएगा। ऐसे में आइआइटी दिल्ली के द्वारा जम्मू आइआइटी की शुरुआत की तैयारी जोरों पर है। जानकारी के अनुसार इस काम के लिए खासतौर पर प्रो.एसके कौल, डिप्टी डायरेक्टर (रणनीति एवं योजना) को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसके अलावा इस प्रोजेक्ट के प्रोफेसर इंचार्ज की भूमिका प्रो. राजेन्द्र बहल निभा रहे हैं। यहां बता दें कि इस प्रोजेक्ट के लिए आइआइटी दिल्ली की मदद से ही पाठ्यक्रम निर्धारण, शिक्षकों की भर्ती व आइआइटी के लिए जरूरी संसाधनों के विकास की योजना को अमली जामा पहनाया जाना है।

प्रोजेक्ट के विषय में आइआइटी, दिल्ली के डीन (रिसर्च एंड डेवलपमेंट) प्रो.सुनीत तुली ने बताया कि सत्र 2016 से शुरू होने वाले जम्मू आइआइटी की शुरुआत तीन कोर्सेज के साथ होगी और हर कोर्स में करीब 60 सीटें उपलब्ध होंगी। उन्होंने बताया कि जम्मू में नगरोटा के पास ही आइआइटी के स्थाई कैंपस के लिए जमीन मिली है और यहीं पर इसका ट्रांजिट कैंपस तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमने इस बार रोपड़, आइआइटी के प्रोजेक्ट से सबक लेते हुए ट्रांजिट कैंपस उसी जगह बनाने का निर्णय किया है, जहां कि नया कैंपस बनना है। इससे नए कैंपस का निर्माण होने पर उसे स्थानांतरित करने में परेशानी नहीं होगी।

Dainik Bhasker ND 15/11/2015 P-1

आईआईटी में स्टार्टअप्स ने बदला माहौल, आईआईएम में पैकेज बड़ा आकर्षण

बिज़नेस करने में आईआईएम को पीछे छोड़ा आईआईटी के छात्रों ने

आदित्य पूजन | नई दिल्ली

आईआईटी के छात्र आंत्रप्रेन्योरशिप में आईआईएम से आगे निकल रहे हैं। जबकि आईआईएम को बिज़नेस की पढ़ाई के लिए ही जाना जाता है। आईआईएम संस्थानों में आईआईटी के मुकाबले आधे से भी कम छात्रों ने आंत्रप्रेन्योरशिप को चुना। इस साल देश के 16 आईआईटी संस्थानों में करीब 1600 छात्र प्लेसमेंट की प्रक्रिया से बाहर रहे। आईआईटी में पिछले साल तक करीब 9800 सीटें थीं। यानी 16 फीसदी से ज्यादा छात्रों की रुचि आंत्रप्रेन्योरशिप में रही। वहीं आईआईएम संस्थानों में करीब 3500 सीटें हैं। इनमें से 200 छात्र (6 फीसदी) भी आंत्रप्रेन्योरशिप को नहीं चुनते हैं।

ऐसा इसलिए भी कहा जा रहा है क्योंकि थॉमसन रायटर्स की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार देश में फंडेड स्टार्टअप शुरू करने वालों में 47 फीसदी आईआईटी या आईआईएम के ही छात्र हैं। लेकिन 2014 की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में शुरू होने वाले स्टार्टअप्स में 50 फीसदी अकेले आईआईटी छात्रों के थे। आईआईएम, अहमदाबाद के आंत्रप्रेन्योरशिप क्लब के सदस्य चिन्मय गावड़े कहते हैं कि छात्र कोर्स पूरा कर अच्छे पैकेज वाली नौकरियों को प्राथमिकता देते हैं। भास्कर ने जब इस बारे में आईआईएम, अहमदाबाद से संपर्क किया तो संस्थान ने इससे संबंधित ट्रेंड, आंकड़े और अन्य पहलुओं के बारे में विस्तार से समझाया। संस्थान के अनुसार आईआईएम छात्रों के लिए सुविधाओं की कोई कमी नहीं है। आईआईटी से बीटेक करने वाले छात्रों की औसत उम्र 22 साल के करीब होती है। प्रोडक्शन और डिजाइनिंग कोर्स का हिस्सा होता है। इसलिए इनोवेशन को अमलीजामा पहनाना और व्यावसायिक स्वरूप देना आसान होता है। फीस भी एक कारण है। आईआईटी, कानपुर के प्रो. एच सी वर्मा आईआईटी संस्थानों में आउट ऑफ क्लास लर्निंग को इसका बड़ा कारण मानते हैं।

आईआईटी में 16%, आईआईएम में 6% छात्रों ने चुना आंत्रप्रेन्योरशिप

टेकप्रेन्योरशिप का ट्रेंड

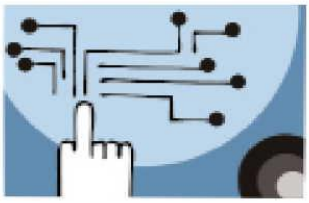

1. जुलाई महीने में 1 अरब डॉलर (करीब 62 अरब रु.) से ज्यादा वैल्यू वाली यूनिकॉर्न क्लब में सात स्टार्टअप को जगह मिली। इनमें से पांच आईआईटी छात्रों की थी। फंडिंग एजेंसियां भी ब्रैंड आईआईटी के साथ जुड़ने के लिए आसानी से राजी होती हैं। आईआईटी, रुड़की के डीन एकेडमिक्स संदीप सिंह इसका कारण तकनीक के बढ़ते महत्व को बताते हैं। तकनीक-आधारित आंत्रप्रेन्योर लोगों की जरूरतों को पूरा करने का आइडिया निकालते हैं। इसलिए ज्यादा कामयाब भी हैं।

फीस का अंतर

2. आईआईएम के पीजीपी कोर्स की फीस 9 लाख से 17 लाख रुपए के बीच है। जबकि आईआईटी के बीटेक कोर्स की मौजूदा फीस 90 हजार रुपए सालाना (चार साल के 3 लाख 60 हजार रु.) है। आईआईएम, रांची के डायरेक्टर इन चार्ज ए सेन मानते हैं कि आईआईटी छात्रों को डिग्री पूरी करने के लिए आईआईएम छात्रों के मुकाबले काफी कम राशि खर्च करनी होती है। वे जोखिम लेने के लिए ज्यादा तैयार रहते हैं। संदीप सिंह हालांकि फीस को बड़ा कारण नहीं मानते।

कोर्स स्ट्रक्चर का फर्क

3. आईआईएम छात्रों को पूरी तैयारी के साथ जोखिम लेने की ट्रेनिंग दी जाती है। उन्हें बिजनेस चलाना सिखाया जाता है, न कि बिजनेस की शुरुआत करना। आईआईटी छात्रों के लिए आंत्रप्रेन्योरशिप का फैसला आसान होता है क्योंकि प्रोडक्शन और डिजाइनिंग की जानकारी पहले से होती है। आईआईएम, अहमदाबाद के एक शिक्षक बताते हैं कि उनके छात्र अपना बिज़नेस शुरू करना चाहते हैं, लेकिन चार-पांच वर्षों के कार्य अनुभव के बाद।

दोनों जगह एक जैसी सुविधाएं, फायदा आईआईटी को

आईआईटी

अधिकतर संस्थानों में आंत्रप्रेन्योरशिप के लिए इनक्यूबेशन सेंटर शुरू किए गए हैं। यहां छात्रों के बिजनेस आइडिया को मूर्त रूप देने के लिए हर सुविधा मौजूद होती है। फैकल्टी और इंडस्ट्री एक्सपर्ट आइडिया की समीक्षा कर फंडिंग, बिजनेस मॉडल, मार्केटिंग, नेटवर्किंग जैसे सभी पहलुओं के बारे में छात्रों को सलाह देते हैं। मद्रास, बॉम्बे और गुवाहाटी जैसे आईआईटी संस्थानों में छात्रों को डेफर्ड प्लेसमेंट की सुविधा भी है। इसमें छात्र डिग्री पूरी करने के एक साल बाद प्लेसमेंट की प्रक्रिया में शामिल हो सकता है। इस दौरान वह आंत्रप्रेन्योरशिप में हाथ आजमा सकता है।

आईआईएम

कई आईआईएम संस्थानों में भी इनक्यूबेशन सेंटर हैं और डेफर्ड प्लेसमेंट की सुविधा पहले से है। आईआईएम, कलकत्ता में डेफर्ड प्लेसमेंट की शुरुआत वर्ष 1911 में हुई थी। आईआईएम, अहमदाबाद के एक छात्र ने बताया कि संस्थान में प्रवेश के लिए सबसे बड़ा आकर्षण प्लेसमेंट और पैकेज स्ट्रक्चर है। वे अच्छे पैकेज वाली नौकरी चुनना पसंद करते हैं। वे आंत्रप्रेन्योरशिप के अनुकूल माहौल के लिहाज से आईआईएम को कमतर नहीं मानते, लेकिन ए सेन मानते हैं कि पिछले दो-तीन वर्षों में स्टार्टअप्स के अनुकूल माहौल बनाने में आईआईटी आगे रहे हैं।

After Making It To Top 100, Iisc Wants To Go Up The Ladder

http://www.nyoooz.com/bengaluru/260576/after-making-it-to-top-100-iisc-wants-to-go-up-the-ladder

Summary: Ajay Sood, professor of Physics at IISc and fellow of the Royal Society, said, “It is great to be ranked in the top 100. Chinese universities are already in the top 20 or 35 in the BRICS rankings, in which IISc is 170th. BENGALURU: The Indian Institute of Science (IISc) may have broken into the Times Higher Education (THE) ranking of the world’s top 100 engineering and technology universities, but the news has evoked mixed response from IISc faculty. IISc has the potential to be in the top 10 and only then can we be content. For citable documents in all subjects, the United States is ranked first, followed by China, the United Kingdom.

BENGALURU: The Indian Institute of Science (IISc) may have broken into the Times Higher Education (THE) ranking of the world’s top 100 engineering and technology universities, but the news has evoked mixed response from IISc faculty. Some are happy the institute has become the first from India to make it to the rankings, but others feel it can do a lot better. Ajay Sood, professor of Physics at IISc and fellow of the Royal Society, said, “It is great to be ranked in the top 100. But we should do even better.” T V Ramachandra, attached to the Centre for Ecological Sciences and Centre for Infrastructure, Sustainable Transportation and Urban Planning (CISTUP), said, “I feel this is an achievement given the limited resources at our disposal. Research grants in the last two years have been paltry.

We could have done a lot more with support from the government and other sectors. The institute’s work on medicinal plants and lakes is socially and locally relevant; this is not considered in the rankings.” ‘Long way to go’ Another faculty member, who did not wish to be named, said, “While it feels good to be the top institution in the country, we have a long way to go when it comes to global standards. IISc has the potential to be in the top 10 and only then can we be content. Something in the Indian ecosystem prevents our universities from reaching the top.

Chinese universities are already in the top 20 or 35 in the BRICS rankings, in which IISc is 170th. There is a lot to be done.” In a paper titled ‘Higher Education, High-impact Research and University Rankings: A Case of India’, author Kotapati Srinivasa Reddy says, “Overall, Chinese universities are found to be outperforming Indian universities, especially in citable documents, number of citations, international collaboration, collaborative research projects, publications and editorship, and university rankings. For citable documents in all subjects, the United States is ranked first, followed by China, the United Kingdom. India stands ninth.”

November 16

Times Of India ND 16/11/2015 P-04

IIT students plan cycle-sharing system for on-campus transport

Shreya.Roychowdhury
@timesgroup.com

New Delhi: Student Affairs Council of Indian Institute of Technology, Delhi, is putting together a cycle-sharing system for students. Using a newly-developed software and bicycles abandoned by generations of alumni at the hostels, the students will solve the problem of on-campus transport.

"We usually walk," says Shivali Goyal, final-year chemical engineering student and general secretary of Student Affairs Council (SAC). Some students buy cycles to get around on a campus that sits over 300 acres; others have to rely on buses that come in. "It was introduced in the agenda of the SAC's September 2015 meeting and cleared," says Goyal.

"The proposal came to us and the budget was sanctioned about a month ago. But the whole project is totally student-driven," adds deputy director, operations, Sushil (he doesn't use a last name),

FOR EASY MOBILITY

"The Indian Institute of Science, Bangalore, has a similar system but it's purely manual. Students sign a register to get a bike out."

The IIT-Delhi system won't involve registers. An alumnus, Harsh Parikh, had developed a software for "something like this" earlier. Since September, a five-member team from the SAC has been building on it. "The hardware-software integration has almost been done," says Goyal.

In the soon-to-be-launched pilot phase, about 50 bikes left at various hostels by former students will be parked at five 'docking stations'—three near the 11 boys' hostels, one for the two girls' hostels and one in the institute area (the administrative and academic blocks). "The stations will have automated locks and sensors," explains Goyal, "A student will have to simply scan their RFID (radio frequency identification) card to release a bike." Once they are done, the student can return the bicycle to any of the five stations.

The group is still figuring out some aspects of the service—whether students should be charged for using bikes for more than 30 minutes or a fine imposed like in libraries. Security, of course, is going to be another issue. Sushil says IIT-D is in the process of installing CCTV cameras on campus and the docking stations will be covered. Ultimately, there'll be a set of about 100 cameras as a part of IIT's smart campus project. "A colour-coding system will be used and the guards at the gates will be informed to ensure the cycles are not taken out of the campus," he adds.

"Students who went abroad for internships saw similar systems in Europe," says Goyal. "We decided to initiate it here—it's environment friendly and keeps people healthy," he said.

Nai Duniya ND 16.11.2015 P-02

अच्छी पहल | इनोवेशन टेक्नोलॉजी बिजनेस इंक्यूबेशन यूनिट का होगा विस्तार, 100 विद्यार्थी कर पाएंगे प्रोजेक्ट पर काम

नई कंपनियां शुरू करने में मदद करेगा आईआईटी

शैलेंद्र सिंह >> नई दिल्ली

नौकरी करने के बजाय अपने आइडिया को विकसित करने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली अपने यहां उपलब्ध इनोवेशन टेक्नोलॉजी बिजनेस इंक्यूबेशन यूनिट को विस्तार प्रदान करने जा रहा है।

अभी तक 20 विद्यार्थियों की क्षमता वाली इस यूनिट को अब बढ़ाकर 100 किया जा रहा है। ये नई यूनिट आईआईटी दिल्ली में बनने वाले मिनी साइंस पार्क का हिस्सा होगी। खास बात ये है कि इस यूनिट की शुरुआत को लेकर 30 करोड़ रुपए का फंड भी निर्धारित हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप इस साल के अंत में इस यूनिट के लिए नई बिल्डिंग का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

मौजूदा यूनिट पड़ रही है छोटी

आईआईटी दिल्ली में डीन रिसर्च एंड डेवलपमेंट प्रो.सुनीत तुली ने बताया कि अभी कैम्पस में चल रही इंक्यूबेशन यूनिट बेहद छोटी साबित हो रही है। यहां आठ सीटें बायोटेक्नोलॉजी और 10-12 सीटें अन्य क्षेत्रों की रिसर्च के लिए उपलब्ध हैं। प्रो.तुली ने बताया कि अभी तक मौजूदा यूनिट की मदद से करीब 50 से 55 कंपनियों की शुरुआत हो चुकी है, लेकिन अब चूंकि इस दिशा में विद्यार्थियों के साथ-साथ सरकारी संस्थानों व निजी कंपनियों की रुचि बढ़ी है, इसलिए हमें बड़े स्तर पर यह काम करना होगा। इसलिए ही मौजूदा यूनिट को विस्तार प्रदान किया जा रहा है।

दिल्ली कैंपस में होगी शुरुआत

प्रो.तुली ने बताया कि आईआईटी दिल्ली में करीब 10 एकड़ में बनने वाले मिनी साइंस पार्क में ही नई इंक्यूबेशन यूनिट शुरू होगी। इसके लिए भवन निर्माण को लेकर जगह तय होने के साथ-साथ नक्शा भी मंजूर हो चुका है और इस साल के अंत में या जनवरी 2016 में निर्माण कार्य भी शुरू हो जाएगा। प्रो. तुली ने बताया कि नई यूनिट को इस तरह से तैयार किया जा रहा है कि कम से कम 100 विद्यार्थी एक समय में यहां अपने प्रोजेक्ट्स पर काम कर पाएं। उन्होंने कहा कि इस यूनिट में कंपनियों के आइडिया पर भी नए बिजनेस प्लान, अकाउंटिंग सहित कंपनियों से जुड़े अन्य अहम पहलुओं पर भी काम किया जा सकेगा। जहां तक फंड की बात है तो आईआईटी दिल्ली ने इस नई यूनिट की शुरुआत को लेकर 30 करोड़ रुपए का फंड भी उपलब्ध करा दिया है। इसके अलावा अन्य स्रोतों से फंड जुटाने की प्रक्रिया जारी है।

Times of India(Education Times) ND 16.11.2015 P-14

President's medal for innovation

Vimal.ChanderJoshi
@timesgroup.com

The sight of a bruised puppy on her way to school last year sparked an idea in Diva Sharma's mind. On returning home, the class XII student developed a stress monitoring mechanism for animals to give them urgent medical care. Her project has recently been shortlisted for National Innovation Foundation (NIF)'s Dr APJ Abdul Kalam IGNITE 2015 award to be given by the president of India, Pranab Mukherjee, on November 30.

The project involves hardware as well as software. "There are some wearable sensors to measure health indices, which are then recorded using the computer software for further application. The software tells us what health problem the animal has and what immediate treatment should be given. I chose four parameters — pulse rate, heart beat, respiratory rate and body temperature. Depending on the results of these four factors, one can gauge the urgency of medical care required," she elaborates.

Diva Sharma

This is one of the 31 ideas from 40 students out of 28,106 entries from schools across the country.

Being a science student, Sharma tends to stay occupied with school classes followed by three private tuition sessions. So, finding time for an extracurricular activity was not easy. But her love for animals helped her complete the project in about seven months.

"I started working on the project during my summer vacations (in 2014) when I had plenty time. Afterwards, I used to take some time out at night. This is how I could finish the project," adds Diva, who sought an IIT Delhi faculty member's help. "I don't think I could have completed the project without his guidance."

PVM Rao, co-ordinator of the innovation centre at IIT Delhi, says, "I played the role of a mentor and guided her about the feasibility of the project."

Diva plans to study engineering economics in college.

Amar Ujala ND 16/11/2015 P-07

आईआईटी देगा छात्रों के आइडिया को उड़ान

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली अपने इनोवेशन टेक्नोलॉजी बिजनेस इंक्यूबेशन यूनिट का विस्तार करने जा रहा है। 20 छात्रों की क्षमता वाले इस यूनिट को बढ़ाकर अब 100 छात्रों की क्षमता वाला बनाया जाएगा। इसके बनने से पढ़ाई के बाद नौकरी के बजाए अपने आइडिया को आगे बढ़ाने के इच्छुक छात्रों को मदद मिलेगी। यूनिट विस्तार के लिए आईआईटी ने 30 करोड़ रुपये का फंड जारी कर दिया है। जनवरी 2016 तक काम भी शुरू हो जाएगा।

आईआईटी दिल्ली में डीन रिचर्स एंड डेवलपमेंट प्रो. सुनीत तुली ने बताया कि नई यूनिट आईआईटी दिल्ली में 10 एकड़ में बनने वाले मिनी साइंस पार्क का हिस्सा होगी। वर्तमान में जो यूनिट चल रही है, वह छात्रों की ओर से आ रहे आइडिया और डिमांड के लिहाज से छोटी साबित हो रही है। इसमें महज आठ सीटें बायोटेक्नोलॉजी और 12 सीटें अन्य क्षेत्रों के अनुसंधान के लिए उपलब्ध है।

कैंपस में इनोवेशन टेक्नोलॉजी बिजनेस इक्यूबेशन यूनिट का विस्तार

20 छात्रों की क्षमता वाले इस सेंटर को 100 छात्रों के लिए बनाया जाएगा

इस छोटी यूनिट से अभी तक करीब 55 कंपनियों की शुरुआत हो चुकी है। उन्होंने कहा कि सेंटर को लेकर सरकारी संस्थानों व निजी कंपनियों की रुचि बढ़ी है। इसी वजह से यूनिट विस्तार का काम शुरू किया गया। भवन निर्माण का नक्शा पास हो गया है।

अगले साल तक काम शुरू हो जाएगा। इसमें एक साथ 100 छात्र प्रोजेक्ट्स पर काम कर सकेंगे। नई यूनिट से कंपनियों के आइडिया पर नए बिजनेस प्लान, एकाउंटिंग सहित कंपनियों से जुड़े अन्य अहम पहलुओं पर भी काम किया जा सकेगा। 30 करोड़ के फंड जारी हो गया है, बाकी फंड जुटाने की प्रक्रिया जारी है।

Indian Express ND 16/11/2015 P-07

Behind historic top-100 rank, IISc's new research course

JOHNSON T A
BENGALURU, NOVEMBER 15

A NEW undergraduate course in research and close attention to details required to enter the Times Higher Education (THE) rankings for engineering and technology universities helped the Indian Institute of Science enter the top 100 rankings for the first time ever for an Indian university, according to IISc director Anurag Kumar.

Bengaluru-based IISc was ranked at 99 in the annual rankings of the top 100 engineering and tech universities by the London-based Times Higher Education last week. No Indian university has figured in the top 100 list for engineering and technology universities in the past.

Although IISc has figured at the highest position for Indian universities in the THE overall world university rankings in the past with a ranking between 276-300 in 2014-15, the institute has never entered the top 100 rankings for engineering and technology universities.

"We have not had the time to compare our rankings in the past with the 2016 rankings. What has given us a good ranking in my view is the completion of the first batch of our undergraduate programme and attention to providing complete data required for the rankings. The completion of the first batch of the UG programme has got us into the ranking," IISc chief Kumar said.

The four-year undergraduate BSc (research) course is a multidisciplinary programme that combines science and engineering lessons, and prepares students to meet the vocational and research demands of the modern technology world.

For its ranking at 99 in the THE list of engineering and technology universities, IISc was, like other universities, evaluated on five parameters — teaching, international outlook, industry income, research and citations. An overall percentage of marking was also provided.

IISc, which never figured in these rankings in previous years, got an overall tally of 49.3 out of a maximum possible 100 while the top Asian university — the National Technological University of Singapore ranked at 13 — got an overall tally of 88.5 marks.

With a 8:2 student teacher ratio and one per cent international students in its 3,318 population, IISc got a 60.7 per cent marking for teaching, 21.2 for international outlook, 48.8 for industry income, 46.7 for research and 42.4 for citations.

In its engineering streams, IISc has seen a surge in collaborative research with industries, forging alliances with global players in the telecom, automobile and aviation sector.

Financial Express ND 16/11/2015 P-06

VARSITY MERIT

India finally makes it to the top-100 in a global ranking of tech and engineering varsities

Even though most world university rankings often don't factor in attributes of varsities that would be valued in the Indian context, the country's poor showing in most such rankings has always been a sore point. It squarely hints at how far its institutions of higher learning are from meeting global standards. And yet, no one would deny that India contributes a significant chunk of the world's highly-skilled STEM (science, technology, engineering and mathematics) professionals and researchers, especially in information technology—which is why it is heartening that the country has finally found mention in the Times Higher Education Ranking for Engineering and Technology's top-100, with the Indian Institute of Science (IISc) placed 99th. It was clearly Asia's year, with the US holding 31 positions—down from 34 last year—while Asia holds 25 positions in the top 100, up from 18 last year.

Though India barely scrapes through, the ranking is a testament to the growing culture of a premium being placed on technology research—IISc was ranked 11th in the world and 3rd in Asia by the QS World University Rankings 2014-15 for "citations per faculty." Given how many of the varsities worldwide making the cut are private institutions, there is perhaps an important lesson to draw here. While most of India's higher education institutions of renown are government-funded ones—there are many goals apart from academic excellence for such varsities, inclusion being one such—cutting edge research is increasingly becoming private sector-led. Many STEM varsities of global renown, in fact, have assumed a new role—as places where tech-led start-ups germinate. Perhaps, with greater liberalisation of its education sector, more Indian institutes could make the cut.

Central universities to soon get access to free Wi-Fi

Hindustan Times (Mumbai)

NEW DELHI: Students of around 38 central universities will finally be able to access free Wifi in university campuses in places including libraries, hostel, canteens and study areas.

A proposal will be tabled in the project approval board of the HRD ministry next week.

The high-speed network will have a bandwidth of 2Gbps allowing students to download data from sites, barring banned ones, through hotspots. The universities will get high-speed connections of 2Gbps; in case there are many colleges within a university, they would get at least 2mbps of bandwidth.

Officials said though the project was announced in the Union budget, it has now been put on fast-track. Most universities will be covered by March 2016 and bigger campuses may take a few more months. The project is in sync with the government's 'Digital India' project.

"Pipelines were laid under the National Knowledge network and we are going to use the same for providing WiFi in universities. The idea is to cover all those specific points that are frequented by students, including restaurants within the campus and hostels," said a senior HRD official.

The UPA government had launched a scheme to provide WiFi to all educational institutions under the National Mission of Education through ICT but its implementation was slow.

In 2014, HRD minister Smriti Irani in a Lok Sabha reply said her government was working on a programme under which WiFi access would be provided. But officials said to ensure students do not use it at odd hours, especially in hostels, the control system and server will be provided to the vice-chancellor so they can decide on implementation .